3

कला और संस्कृति के प्रति जागरूकता सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र, संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार)

*आशुतोष**

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने 'नई तालीम' अर्थात् बुनियादी शिक्षा योजना में शिक्षा की नयी अवधारणा को प्रस्तुत किया था। इस शिक्षा योजना में गाँधी जी की परिकल्पना थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों के शरीर, हृदय, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास कर सके अर्थात् बच्चों में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक गुणों का विकास किया जा सके।

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो आर्थिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति कर सके जिससे सभी बालक आत्मिनिर्भर बन सकें। उन्होंने शारीरिक श्रम को महत्व देते हुए हस्त शिल्पकला के माध्यम से जीविकोपार्जन करने की सीख दी तथा यह सुझाव दिया गया कि शिल्प की शिक्षा ऐसी दी जाए जिससे सभी बच्चे उसके सामाजिक एवं वैज्ञानिक महत्व को समझ सकें।

गाँधी जी ने संस्कृति को शिक्षा का आधार माना जो मानव के व्यवहार में परिलक्षित हो सकें। उपरोक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शिक्षा को संस्कृति के साथ जोड़ने के उद्देश्य को लेकर संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की एक प्रमुख संस्था सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सी.सी.आर.टी.), नयी दिल्ली, अध्यापकों व छात्रों के लिए विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित करती है। सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र देश की एक अग्रणी संस्था है जो शिक्षा को संस्कृति के साथ समन्वय का कार्य कर रही है। इसकी स्थापना 1979 में श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय एवं डॉ. कपिला वात्स्यायन जैसे भारतीय संस्कृति, कला तथा शिक्षा के क्षेत्र के असाधारण व्यक्तित्व द्वारा की गई।

* *क्षेत्रीय अधिकारी*, सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, 15 ए, सेक्टर-7, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र, संस्कृति आधारित सार्थक शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग देते रहे हैं। इसका मुख्यालय नयी दिल्ली में है। इसके तीन क्षेत्रीय केंद्र हैं – हैदराबाद, उदयपुर एवं गुवाहाटी जो भारतीय कला और संस्कृति के व्यापक प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे रहे हैं।

सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र का मुख्य लक्ष्य देशभर के सेवारत शिक्षकों-प्रशिक्षकों, शैक्षिक-प्रशासकों, छात्रों हेतु विविध प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन करना है। इन शैक्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत सांस्कृतिक पुस्तक-पुस्तिकाएँ, दृश्य-श्रव्य सामग्री देशभर की कला एवं शिल्पपरक सामग्री, स्लाइड, फ़ोटोग्राफ़, फ़िल्मों आदि द्वारा पाठ्यक्रम शिक्षण में सांस्कृतिक तत्वों को सम्मिलित करने पर विशेष बल दिया जाता है।

इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का लाभ देशभर के सरकारी विद्यालयों में सेवारत शिक्षकों एवं छात्रों को मिल रहा है। इस केंद्र के माध्यम से मार्च, 2015 कुल 156349 सरकारी विद्यालयों में सेवारत शिक्षक/शिक्षिकाएँ एवं 673508 छात्र /छात्राओं को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रशिक्षित किया जा चुका है। देशभर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों हेतु केंद्र द्वारा मुख्यत: अनुस्थापन पाठ्यक्रम, विभिन्न कार्यशालाओं के अंतर्गत शिक्षा में पुतलीकला की भूमिका, प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में विद्यालयों की भूमिका समाजोपयोगी उत्पादक कार्य, हमारी सांस्कृतिक विविधता, शिक्षा में नाट्य कलाएँ, केंद्र द्वारा प्रशिक्षित शिक्षकों हेतु पुनश्चर्या पाठ्यक्रम एवं सेमिनार जैसे महत्वपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

केंद्र देशभर से पांडुलिपियों को एकत्रित करने एवं उसे प्रलेखित करने का कार्य भी कर रही है। केंद्र, सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना, युवा कलाकारों हेतु विभिन्न कला क्षेत्रों में छात्रवृत्ति की योजना एवं संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में गहन अनुसंधान हेतु फ़ैलोशिप जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं को क्रियान्वित भी करती है।

स्कूली पाठ्यक्रम पर आयोजित विस्तृत चर्चाओं में सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों, जैसे— नृत्य, नाटक, संगीत, दृश्य-कलाएँ, साहित्य इत्यादि पर प्राय: कम ध्यान दिया जाता है। इस अध्येय को ध्यान में रखते हुए केंद्र द्वारा देशभर के सरकारी विद्यालयों में सांस्कृतिक क्लब की स्थापना का कार्य भी किया जाता है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में भारत की समृद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानने हेतु प्रेरित करना है। इस सांस्कृतिक क्लब की स्थापना इन विद्यालयों में ही की जाती है, जहाँ केंद्र द्वारा प्रशिक्षित शिक्षक कार्य कर रहे हैं। इन सांस्कृतिक क्लबों के माध्यम से विद्यार्थियों के बीच भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन, व्याख्यान / वार्ता का आयोजन, स्थानीय धरोहरों का अध्ययन, स्थानीय ऐतिहासिक स्मारकों का अध्ययन एवं शैक्षिक भ्रमण, क्षेत्रीय पारंपरिक कलाकारों / शिल्पकारों से बातचीत जैसी मुख्य गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

'सी.सी.आर.टी.' की अन्य एक महत्वपूर्ण योजना विस्तार सेवा एवं समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम है, जिसके अंतर्गत सरकारी विद्यालयों एवं

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 19 5/26/2017 9:26:53 AM

गैर-सरकारी संगठनों में अध्ययनरत छात्रों के लिए प्रकृति एवं कला में निहित सौंदर्य के प्रति संवेदनशील बनाने तथा उन्हें रचनात्मक गतिविधियों में सम्मिलित करने हेतु कई प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन करती है। इस कार्यक्रम के माध्यम से सी.सी. आर.टी. शिल्पकलाओं, शास्त्रीय नृत्य एवं लोकनृत्य, भारतीय कला तथा संस्कृति के विविध पहलुओं पर स्लाइड-व्याख्यान तथा ऐतिहासिक स्मारकों, संग्रहालयों एवं कला विधि पर शैक्षिक भ्रमण का आयोजन करती है। इन विभिन्न माध्यमों से केंद्र प्रत्येक वर्ष लगभग एक लाख बच्चों को देशभर में प्रशिक्षित करती है। इस योजना के माध्यम से छात्रों को भारत की समृद्ध प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति जागरूक किया जाता है एवं उन्हें उसके संरक्षण में भाग लेने का सुअवसर मिलता है। शिक्षा को संस्कृति के साथ जोड़ने के उद्देश्य लेकर ही सी.सी.आर.टी. द्वारा 'कला तथा संस्कृति के प्रति जागरूकता' विषय पर प्रतिवर्ष दिनांक 18-28 मई तक केंद्र के परिसर में एक विशेष ग्रीष्मकालीन कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इस दस-दिवसीय ग्रीष्मकालीन कार्यशाला में 09-13 आयु वर्ग के लगभग 300 बच्चे भाग लेते हैं।

इस कार्यशाला के दौरान कला तथा शिल्प से संबंधित विभिन्न शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। हाल ही में दिनांक 18-28 मई 2016 तक सी.सी.आर.टी. के सुंदर प्रांगण में प्रकृति के बीच ग्रीष्मकालीन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में रंगमंच शिक्षा, लोकनृत्य, भारतीय भाषाओं के गीत सीखना, जीवन कौशल का विकास, सुलेखन तथा कहानी कहने की कला जैसे कलात्मक विषयों में बच्चों को प्रशिक्षण दिया गया। कला गतिविधियों के अतिरिक्त हस्तशिल्प विधाओं में चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाना, कागज़ के खिलौने बनाना, मधुबनी चित्रकला, रंगोली, मुखौटे बनाना, मिट्टी के खिलौने बनाना, जिल्दसाज़ी, मैकरेम, बांधनी भित्तिचित्रण, पतंग बनाना, पेपर मेशी, मोतियों की माला बनाना, बैंत का कार्य, पट्चित्रण इत्यादि पर देश के विभिन्न भागों से आए शिल्पकारों/कलाकारों ने स्थानीय स्तर पर 284 बच्चों को प्रशिक्षित किया।

इस कार्यशाला में बच्चों ने बहुत उत्साह से कला गतिविधियों के साथ-साथ हस्त शिल्पकला से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभागिता की एवं अपने हाथों से बनाई शिल्पकला का प्रदर्शन किया। राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा से आए शिल्पकलाकारों ने बच्चों के साथ मिलकर दस दिन तक इस कार्यशाला में कार्य किया। जिसमें ज़्यादातर शिल्पकारों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त है।

भारत जैसे सांस्कृतिक विविधता वाले देश में पुरानी विधाओं को प्राचीनकाल से ही बहुत महत्त्व प्राप्त है। आधुनिक काल में मशीनीकरण के बावजूद भारतीय हस्तशिल्प बेहद चर्चित और आकर्षण का केंद्र रहा है। ऐसे में नयी पीढ़ी को भी इन हस्तशिल्प क्षेत्रों के महत्त्व से अवगत कराने एवं पारंपरिक हस्तशिल्प में बच्चों के कौशल विकास के उद्देश्य से भी यह कार्यशाला बेहद सफ़ल रही।

केंद्र के प्रशिक्षण कार्यक्रमों, छात्रवृत्ति, फ़ैलोशिप एवं अन्य आयोजित की जाने वाली शैक्षिक गतिविधियों की पूरी जानकारी केंद्र की वेबसाइट www.ccrtindia.gov.in पर भी उपलब्ध है।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 20 5/26/2017 9:26:53 AM